International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(6): 25-26

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(6): 25-26
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 19-09-2019
Accepted: 21-10-2019

डॉ. श्याम बहादुर दीक्षित
एम.ए.,डी.फिल् (संस्कृत), इलाहाबाद विश्वविद्यालय, सहायक अध्यापक सर्वोदय इण्टर कालेज, लम्भुआ, सुलतानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. श्याम बहादुर दीक्षित
एम.ए.,डी.फिल् (संस्कृत), इलाहाबाद विश्वविद्यालय, सहायक अध्यापक सर्वोदय इण्टर कालेज, लम्भुआ, सुलतानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

जयशेखर सूरि कृत जैनकुमारसम्भव महाकाव्य का महाकाव्यत्व

डॉ. श्याम बहादुर दीक्षित

प्रस्तावना

''कवते श्लोकान् ग्रथते, वर्णयति वा कविः'' श्लोक रचना या वर्णन करने वाले को कवि कहते है। ऐसी व्युत्पत्ति अमरकोश के टीकाकार भानुजीक्षित ने की है। शब्दकल्पद्रुम में 'कुशब्दे' धातु से अचइ सूत्र द्वारा 'इ' प्रत्यय करने पर कवि की उत्पत्ति सिद्ध की गयी है। विद्याधर के एकावलि में 'कवयति इति कविः तस्य कर्म काव्यम्' ऐसी व्युत्पत्ति की है। ध्वन्यालोक में 'कवनीयं काव्यम्' व्युत्पत्ति की गयी है। इस प्रकार वर्णन करने वाले या जानने वाले को कवि तथा उसके कर्म या कृति को काव्य कहते है। यद्यपि 'कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः' के द्वारा कवि का प्रयोग सर्वज्ञ परमेश्वर के लिए हुआ है, ' तया तेने ब्रह्मदृवा च आदि कवये' के अनुसार 'आदि कवि' शब्द का अर्थ ब्रह्मा के अर्थ में मिलता है। शुक्रदैत्यगुरू काव्य उश्ना भार्गवः कविः[1] आदि कोश के अनुसार कवि शब्द दैत्यगुरू शुक्राचार्य अर्थ में और ''विद्वान विब्विदोषज्ञः पण्डितः कविः'' पण्डित कवि अर्थ में उपलब्ध होता है तथापि आदि कवि बाल्मीकि, व्यास के लिए भी कवि शब्द का प्रयोग मिलता है। इसी से महर्षि बाल्मीकि प्रणीत रामायण के प्रत्येक सर्ग की पुष्पिका में 'ईष्यार्थे आदि काव्ये' सर्वत्र लिखा हुआ प्राप्त होता है। महर्षि व्यास कृत महाभारत की गणना भी काव्य में की गई है। इन्होंने स्वयं इसका प्रतिपादन किया है–''कृतं मयेदं भगवन् काव्यं परम पूजितम्'' तथा साहित्य दर्पणकार विश्वनाथ ने भी ''अस्मिन् महाकाव्ये यथा महाभारतम्'' कहते हुए महाभारत को स्पष्ट रूप से महाकाव्य स्वीकार किया है।[2]

आचार्य भामह ने सर्वप्रथम अपने काव्यालंकार में महाकाव्य का लक्षण किया है। उसका लक्षण सक्षिप्त होते हुए भी महाकाव्य लक्षण की विशेषता है और महाकाव्य के समस्त तत्त्वों का समावेश उसकी उपादेयता।

भामह कृत महाकाव्य के आवश्यक तत्व ये है[3]

1. सर्गवद्धता
2. महान और गम्भीर विषय
3. उदात्त नायक
4. चतुवर्ग का प्रतिपादन
5. नायक का अभ्युदय
6. सदाश्रियत्व
7. पंचसन्धि नाटकीय गुण
8. लोक स्वभाव और विविध रसों की प्रतीति
9. समृद्धि, ऋतु वर्णन आदि।

आगे के आचार्यों ने भामह प्रोक्त महाकाव्य लक्षण में यत्र–तत्र परिवर्तन करके उसे ही स्वीकार किया है। आचार्य विश्वनाथ का काव्य लक्षण उस सम्पूर्णता को समेटे हुए है। जिसके अनुसार–महाकाव्य का नायक धीरोदात्तादि गुणों से युक्त, सदवंशीय, क्षत्रिय, या देवता होता है। सम्पूर्ण रसों की सत्ता (व्यापकता) को सीमित करते हुए उन्होंने केवल श्रृंगार, वीर और शान्त रसों में से एक रस की प्रधानता (अङ्गी) को स्वीकार किया है। विश्वनाथ से पूर्व किसी भी आचार्य ने सर्गों की संख्या निर्धारित नही की थी किन्तु विश्वनाथ ने इसे सीमित करके महाकाव्य को कम से कम आठ सर्गों का होना आवश्यक माना है सर्गों के स्वरूप न तो बहुत बड़े न ही अधिक छोटे हो, स्वीकार किया है। प्रकृति चित्रण में विश्वनाथ ने पूर्वाचार्यों के कथन को ही दुहराया है और महाकाव्य में नाटकीयता लाने तथा रस भाव निरन्तरता को स्थिर करने के लिए सर्गान्त में भावी सर्ग की कथा का संकेत होना स्वीकार किया है।[4]

जैनकुमारसम्भव महाकाव्य

महाकवि कालिदास के कुमार सम्भव से प्रेरणा ग्रहण कर आंचलगच्छीय महेन्द्रप्रभसूरि के शिष्य महाकवि जयशेखरसूरि ने इस महाकाव्य की रचना की है। यह महाकाव्य 11 सर्गों में विभक्त है तथा सम्पूर्ण श्लोक की संख्या 850 है। कुमार भरत के जन्म का उल्लेख नहीं हुआ है। इसके छठे सर्ग में सुमङ्गला के गर्भाधान का संकेत अवश्य मिलता है। कवि ने इसे महाकाव्य कहा है। किन्तु कुछ विद्वानों के मत में यह एकार्थ काव्य है। सम्भवतः पुरूषार्थचतुष्टय में से केवल मोक्ष प्राप्ति के प्रधान वर्णन के कारण विद्वानों ने इसे एकार्थ काव्य माना है। काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों में एकार्थ काव्य की सूची में इसका नामोल्लेख मिलता है। जो भी हो देवाश्रित चरित्र के अंकन से यह पौराणिक और भरत आदि के ऐतिहासिक प्रख्यात पात्र के वर्णन से यह ऐतिहासिक महाकाव्य है। इसमें महाकाव्य के भी अधिकांश लक्षण विद्यमान है। जैसा कि आचार्य विश्वनाथ ने अपने महाकाव्य लक्षण में वर्णित किया है। अर्थात् इस महाकाव्य का नायक धीरोदात्तादि गुणों से युक्त सद्वंशीय क्षत्रिय है इसमें श्रृंगार रस, वात्सल्य रस, हास्य रस, आदि का वर्णन दृष्टिगत होता है। इसमें विभिन्न छन्दों यथा इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ आदि सत्तरह छन्दों की योजना है। सर्गों की संख्या आठ से भी अधिक ग्यारह है प्रकृति चित्रण के साथ–साथ महाकाव्य में नाटकीयता लाने तथा रसभाव निरन्तरता को स्थिर रखने के लिए सर्गान्त में भावी सर्ग की कथा का संकेत भी दृष्टिगत होता है। इसमें चतुवर्ग प्राप्ति के सन्दर्भ में मोक्ष प्राप्ति, तथा रसभाव की योजना सूत्र संबिधान, नगर, दूत–प्रयाण, रतोत्सव, आवास आदि का वर्णन यथा स्थान किया गया है। अतः इसे महाकाव्य कहा जा सकता है।[5]

जैनकुमारसम्भव की कथा

अयोध्या के राजा नाभिराय और रानी मरूदेवी के पुत्र ऋषभदेव ने जन्म के उपरान्त मनोहर बाल सुलभ क्रीडाओं को करते हुए योवन को धारण किया। तुम्बरू और नारद नामक दो देवऋषियों द्वारा इनके जन्म लेने की बात सुनकर इन्द्र को इनके विवाह की चिन्ता हुई। ऋषभदेव द्वारा विवाह के विषय में मौन धारण करने पर इन्द्र ने ''मौनं स्वीकृति लक्षणं'' इस आधार पर उनके विवाह की तैयारियाँ कर दी और इन्द्र ने इनकी प्रशंसा करते हुए विवाह मण्डप को सजाया। देवियों ने दो कन्याओं सुमंगला और सुनन्दा का श्रृंगार किया। विवाह के अवसर पर देवताओं ने नृत्य किया। ऋषभदेव तथा सुमंगला–सुनन्दा को पति–पत्नी के सम्बन्धों की शिक्षा दी गयी। इस प्रकार शीलवती सुमंगला गर्भवती हो जाती है। एक दिन सुमंगला रात्रि में चौदह स्वप्न देखती है और वह उनके फलों को जानने हेतु उत्कंठित होती है। अपनी इस उत्कण्ठा के समापन हेतु वह प्रभु से उन स्वप्नों के विषय में पूछती है। ऋषभदेव सुमंगला को एक–एक स्वप्नों का फल बताते हैं, जिसे सुनकर सुमंगला अत्यन्त हर्षित होती है और वह प्रभु का यशोगान करती है। सुमंगला अपने वासगृह में लौट जाती है और समूचे वृत्तात को अपनी सखियों से बताती है। वह प्रभु का यशोगान करती है तथा अपनी सखियों से हास–परिहास अथवा आलाप–प्रत्यालाप भी करती है। इन्द्र सुमंगला के भाग्य की सराहना करते हैं और कहते हैं कि अवधि के पूर्ण होने पर सुमंगला को पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी, इसके पति का वचन मिथ्या नहीं हो सकता , इसके पुत्र के नाम से यह भूमि 'भारत' तथा वाणी भारतीय कहलायेगी। इस प्रकार मध्यान्ह वर्णन के साथ यह महाकाव्य समाप्त हो जाता है।[6]

सन्दर्भ सूची

1. वाल्मीकि–रामायण–प्रत्येक सर्ग की पुष्पिका में।
2. महाभारत–अनु0प0–1/61
3. सर्गवन्धो महाकाव्यं महतां च महच्चमत्।
4. अग्राम्यशब्दमर्थ च सालंकारं सदाश्रयम्।।
5. मन्त्रदूत प्रयाराजि नायकाभ्युदयं च यत्।
6. पंचभिः संधिभिर्युक्तं नातिव्याख्येयमृद्धिमत्।।
7. चतुवर्गाभिधानेऽपि भूय सावोपदेशकृत।
8. युक्तं लोकस्वभावेन रसेश्च सकलेः पृथक्।।
9. नायकं प्रागुपन्यस्त वंशवीर्य–श्रुतादिमिः।
10. न तस्यैव वधं ब्रूयादन्योत्कर्षाभिधित्सिया।।
11. 1/25 आचार्यभामह काव्यालंकार 1/22–25
12. सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।। (315)
13. सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तगुणान्वितः।
14. एकवंशभवा भूपाः कुलजा वहवोऽपि वा।। (316)
15. श्रृंगारवीरशान्तानामेकोऽङ्गी रस इष्यते।
16. अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसंधयः।। (317)
17. इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद् वा सज्जनाश्रयम्।
18. चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेत्।। (318)
19. आदौ नमस्क्रियाऽऽशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा।
20. क्वचिन्निन्दा खलादीनां, सतां च गुणकीर्तनम्।। (319)
21. एकवृत्तमयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकैः।
22. नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह।। (320)
23. कवेर्वृतस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा।। (324)
24. नामास्य सर्गोपादेयकथया सर्गनाम तु।। (325)
25. विश्वनाथ कृत साहित्य दर्पण–षष्ठः परिच्छेदः (315–325)
26. महाकवि जयशेखर सूरि
27. कौमारिकेलि कलनाभिरमुष्यपूर्व–
28. लक्षाः षडे कलवतां नयतः सुखाभिः।
29. आधाप्रिया गरभमेण दृशामभीष्टं
30. भर्तुः प्रसादमविनश्वरमासादं।।
31. जै0कु0सं0–6/74
32. जैनकुमारसम्भव–जयशेखरसूरिकृत–1–11 सर्गोंतक